रविवार 7 फरवरी, 2021

विषय — आत्मा

स्वर्ण पाठ: **जकर्याह** 4 : 6

"न तो बल से, और न शक्ति से, परन्तु मेरे आत्मा के द्वारा होगा, मुझ सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।"

उत्तरदायी अध्ययन: **1 कुरिन्थियों 2 : 9, 10**
गलातियों 5 : 16-18, 22, 23

9 परन्तु जैसा लिखा है, कि जो आंख ने नहीं देखी, और कान ने नहीं सुना, और जो बातें मनुष्य के चित्त में
नहीं चढ़ीं वे ही हैं, जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखने वालों के लिये तैयार की हैं।
10 परन्तु परमेश्वर ने उन को अपने आत्मा के द्वारा हम पर प्रगट किया; क्योंकि आत्मा सब बातें, वरन
परमेश्वर की गूढ़ बातें भी जांचता है।
16 पर मैं कहता हूं, आत्मा के अनुसार चलो, तो तुम शरीर की लालसा किसी रीति से पूरी न करोगे।
17 क्योंकि शरीर आत्मा के विरोध में, और आत्मा शरीर के विरोध में लालसा करती है, और ये एक
दूसरे के विरोधी हैं; इसलिये कि जो तुम करना चाहते हो वह न करने पाओ।
18 और यदि तुम आत्मा के चलाए चलते हो तो व्यवस्था के आधीन न रहे।
22 पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज,
23 और कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम हैं; ऐसे ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. भजन संहिता 143 : 1, 10

1 हेयहोवा मेरी प्रार्थना सुन; मेरे गिड़गिड़ाने की ओर कान लगा! तू जो सच्चा और धर्मी है, सो मेरी सुन ले,
10 मुझ को यह सिखा, कि मैं तेरी इच्छा क्योंकर पूरी करूं, क्योंकि मेरा परमेश्वर तू ही है! तेरा भला आत्मा
मुझ को धर्म के मार्ग में ले चले!

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

2. 1 कुरिन्थियों 12 : 13

13 क्योंकि हम सब ने क्या यहूदी हो, क्या युनानी, क्या दास, क्या स्वतंत्र एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिये बपतिस्मा लिया, और हम सब को एक ही आत्मा पिलाया गया।

3. मरकुस 1: 9-11

9 उन दिनों में यीशु ने गलील के नासरत से आकर, यरदन में यूहन्ना से बपतिस्मा लिया।
10 और जब वह पानी से निकलकर ऊपर आया, तो तुरन्त उस ने आकाश को खुलते और आत्मा को कबूतर की नाई अपने ऊपर उतरते देखा।
11 और यह आकाशवाणी हई, कि तू मेरा प्रिय पुत्र है, तुझ से मैं प्रसन्न हूं॥

4. लूका 4: 14, 15, 33-36

14 फिर यीशु आत्मा की सामर्थ से भरा हुआ गलील को लौटा, और उस की चर्चा आस पास के सारे देश में फैल गई।
15 और वह उन की आराधनालयों में उपदेश करता रहा, और सब उस की बड़ाई करते थे॥
33 आराधनालय में एक मनुष्य था, जिस में अशुद्ध आत्मा थी।
34 वह ऊंचे शब्द से चिल्ला उठा, हे यीशु नासरी, हमें तुझ से क्या काम? क्या तू हमें नाश करने आया है? मैं तुझे जानता हूं तू कौन है? तू परमेश्वर का पवित्र जन है।
35 यीशु ने उसे डांटकर कहा, चुप रह: और उस में से निकल जा: तब दुष्टात्मा उसे बीच में पटककर बिना हानि पहुंचाए उस में से निकल गई।
36 इस पर सब को अचम्भा हुआ, और वे आपस में बातें करके कहने लगे, यह कैसा वचन है कि वह अधिकार और सामर्थ के साथ अशुद्ध आत्माओं को आज्ञा देता है, और वे निकल जाती

5. मत्ती 12: 22-28

22 तब लोग एक अन्धे-गूंगे को जिस में दुष्टात्मा थी, उसके पास लाए; और उस ने उसे अच्छा किया; और वह गूंगा बोलने और देखने लगा।
23 इस पर सब लोग चकित होकर कहने लगे, यह क्या दाऊद की सन्तान का है?
24 परन्तु फरीसियों ने यह सुनकर कहा, यह तो दुष्टात्माओं के सरदार शैतान की सहायता के बिना दुष्टात्माओं को नहीं निकालता।

25 उस ने उन के मन की बात जानकर उन से कहा; जिस किसी राज्य में फूट होती है, वह उजड़ जाता है,
और कोई नगर या घराना जिस में फूट होती है, बना न रहेगा।
26 और यदि शैतान ही शैतान को निकाले, तो वह अपना ही विरोधी हो गया है; फिर उसका राज्य क्योंकर
बना रहेगा?
27 भला, यदि मैं शैतान की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूं, तो तुम्हारे वंश किस की सहायता से
निकालते हैं? इसलिये वे ही तुम्हारा न्याय चुकाएंगे।
28 पर यदि मैं परमेश्वर के आत्मा की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूं, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे
पास आ पहुंचा है।

6. यूहन्ना 6: 63

63 आत्मा तो जीवनदायक है, शरीर से कुछ लाभ नहीं: जो बातें मैं ने तुम से कहीं हैं वे आत्मा है, और
जीवन भी हैं।

7. 2 कुरिन्थियों 3 : 4-6, 17, 18

4 हम मसीह के द्वारा परमेश्वर पर ऐसा ही भरोसा रखते हैं।
5 यह नहीं, कि हम अपने आप से इस योग्य हैं, कि अपनी ओर से किसी बात का विचार कर सकें; पर
हमारी योग्यता परमेश्वर की ओर से है।
6 जिस ने हमें नई वाचा के सेवक होने के योग्य भी किया, शब्द के सेवक नहीं वरन आत्मा के; क्योंकि
शब्द मारता है, पर आत्मा जिलाता है।
17 प्रभु तो आत्मा है: और जहां कहीं प्रभु का आत्मा है वहां स्वतंत्रता है।
18 परन्तु जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो
प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश अंश कर के बदलते जाते हैं॥

8. 2 कुरिन्थियों 5: 1-8

1 क्योंकि हम जानते हैं, कि जब हमारा पृथ्वी पर का डेरा सरीखा घर गिराया जाएगा तो हमें परमेश्वर की
ओर से स्वर्ग पर एक ऐसा भवन मिलेगा, जो हाथों से बना हुआ घर नहीं परन्तु चिरस्थाई है।
2 इस में तो हम कराहते, और बड़ी लालसा रखते हैं; कि अपने स्वर्गीय घर को पहिन लें।
3 कि इस के पहिनने से हम नंगे न पाए जाएं।
4 और हम इस डेरे में रहते हुए बोझ से दबे कराहते रहते हैं; क्योंकि हम उतारना नहीं, वरन और पहिनना
चाहते हैं, ताकि वह जो मरनहार है जीवन में डूब जाए।

5 और जिस ने हमें इसी बात के लिये तैयार किया है वह परमेश्वर है, जिस ने हमें बयाने में आत्मा भी दिया है।
6 सो हम सदा ढाढ़स बान्धे रहते हैं और यह जानते हैं; कि जब तक हम देह में रहते हैं, तब तक प्रभु से अलग हैं।
7 क्योंकि हम रूप को देखकर नहीं, पर विश्वास से चलते हैं।
8 इसलिये हम ढाढ़स बान्धे रहते हैं, और देह से अलग होकर प्रभु के साथ रहना और भी उत्तम समझते हैं।

9. रोमियो 8: 1-6, 16, 17 (*से 2nd* ;)

1 सो अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं: क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं।
2 क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की, और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया।
3 क्योंकि जो काम व्यवस्था शरीर के कारण दुर्बल होकर न कर सकी, उस को परमेश्वर ने किया, अर्थात अपने ही पुत्र को पापमय शरीर की समानता में, और पाप के बलिदान होने के लिये भेजकर, शरीर में पाप पर दण्ड की आज्ञा दी।
4 इसलिये कि व्यवस्था की विधि हम में जो शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं, पूरी की जाए।
5 क्योंकि शरीरिक व्यक्ति शरीर की बातों पर मन लगाते हैं; परन्तु आध्यात्मिक आत्मा की बातों पर मन लगाते हैं।
6 शरीर पर मन लगाना तो मृत्यु है, परन्तु आत्मा पर मन लगाना जीवन और शान्ति है।
16 आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं।
17 और यदि सन्तान हैं, तो वारिस भी, वरन परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस हैं॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 335 : 12-15

आत्मा एकमात्र पदार्थ है, अदृश्य और अविभाज्य अनंत भगवान। आध्यात्मिक और शाश्वत चीजें पर्याप्त हैं। चीजें सामग्री और अस्थायी असाध्य हैं।

2. 468 : 11-12 (*से*;), 12-13 (*से*;), 13-15

आत्मा अमर सत्य है; ... आत्मा ही वास्तविक और शाश्वत है; ... आत्मा ईश्वर है, और मनुष्य उसकी छवि और समानता है। इसलिए आदमी भौतिक नहीं है; वह आध्यात्मिक है।

3. 481 : 2-9

मनुष्य ईश्वर, आत्मा, और कुछ नहीं के लिए सहायक है। ईश्वर का होना अनंत, स्वतंत्रता, सद्भाव और असीम आनंद है। "और जहां कहीं प्रभु का आत्मा है वहां स्वतंत्रता है।" योर के द्वीपसमूह की तरह, मनुष्य स्वतंत्र है "पवित्रतम में प्रवेश करने के लिए," - भगवान का क्षेत्र।

भौतिक बोध कभी भी मनुष्यों को आत्मा, ईश्वर को समझने में मदद नहीं करता है। केवल आध्यात्मिक अर्थों के माध्यम से, मनुष्य समझ पाता है और देवता से प्यार करता है।

4. 505 : 16-17, 20-28

आत्मा उस समझ को प्रदान करती है जो चेतना को बढ़ाती है और सभी सत्य की ओर ले जाती है। ... आध्यात्मिक भावना आध्यात्मिक अच्छाई की समझ है। समझ वास्तविक और असत्य के बीच सीमांकन की रेखा है। आध्यात्मिक समझ मन, जीवन, सत्य और प्रेम को प्रकट करती है, — और क्रिश्चियन साइंस में ब्रह्मांड का आध्यात्मिक प्रमाण देते हुए, दिव्य भावना को प्रदर्शित करता है।

यह समझ बौद्धिक नहीं है, विद्वानों की प्राप्ति का परिणाम नहीं है; यह प्रकाश में लाई गई सभी चीजों की वास्तविकता है।

5. 312: 31-1 (*से 1st.*)

यीशु के आध्यात्मिक मूल और दिव्य सिद्धांत के उनके प्रदर्शन ने उन्हें समृद्ध किया और उन्हें विज्ञान में पुत्रत्व का हकदार बनाया।

6. 315 : 11-24, 29-2

लोगों के विपरीत और झूठे विचारों ने उनकी भावना से, परमेश्वर के साथ मसीह के पुत्रत्व को छिपा दिया वे उसके आध्यात्मिक अस्तित्व को समझ नहीं पाए। उनके कार्तिक मन इसके शत्रु थे। उनके विचारों को नश्वर त्रुटि के साथ भरा गया था, बजाय भगवान के आध्यात्मिक विचार के साथ जो मसीह यीशु द्वारा प्रस्तुत किया गया था। भगवान की समानता जिससे हम पाप के माध्यम से दृष्टि खो देते हैं, जो सत्य के आध्यात्मिक अर्थ को उद्घाटित करता है; और हम इस समानता का एहसास तभी करते हैं जब हम पाप को कम करते हैं और मनुष्य की विरासत को साबित करते हैं, भगवान के बेटों की स्वतंत्रता।

यीशु की आध्यात्मिक उत्पत्ति और समझ ने उसे होने के तथ्यों को प्रदर्शित करने में सक्षम किया, - यह साबित करने के लिए कि आध्यात्मिक सत्य भौतिक त्रुटि को कैसे नष्ट करता है, बीमारी को ठीक करता है, और मृत्यु को मात देता है।

एक मानव रूप में पहने हुए (अर्थात्, जैसा कि यह नश्वर दृश्य लगता था), एक मानव मां द्वारा कल्पना की जा रही थी, यीशु सत्य और त्रुटि के बीच आत्मा और मांस के बीच मध्यस्थ थे। ईश्वरीय विज्ञान के तरीके को समझाते और प्रदर्शित करते हुए, वह उन सभी के लिए मुक्ति का मार्ग बन गया, जिन्होंने उनके वचन को स्वीकार किया।

7. 146 : 2-12

प्राचीन ईसाई चिकित्सक थे। ईसाई धर्म का यह तत्व क्यों खो गया है? क्योंकि हमारे धर्म की प्रणालियाँ चिकित्सा की हमारी प्रणालियों द्वारा कम या ज्यादा संचालित होती हैं। पहले मूर्तिपूजा सामग्री में विश्वास था। स्कूलों ने देवता में विश्वास के बजाय, ड्रग्स के फैशन पर विश्वास किया है। अपनी ही कलह को नष्ट करने के लिए मामले पर भरोसा करके, स्वास्थ्य और सद्भाव का त्याग किया गया है। ऐसी प्रणालियाँ आध्यात्मिक शक्ति की जीवन शक्ति के बंजर हैं, जिनके द्वारा भौतिक अर्थों को विज्ञान का सेवक बना दिया जाता है और धर्म क्रिस्टलाइज हो जाता है।

8. 97 : 17-20

यह विश्वास जितना अधिक भौतिक है, उतनी ही स्पष्ट इसकी त्रुटि है, जब तक कि दिव्य आत्मा, अपने क्षेत्र में सर्वोच्च नहीं है, सभी मामलों पर हावी है, और मनुष्य आत्मा, उसके मूल होने की समानता में पाया जाता है।

9. 490 : 19-27

"आत्मा को न बुझाओ। भविष्यद्वाणियों को तुच्छ न जानो।" मानव विश्वास - या तथाकथित भौतिक इंद्रियों से प्राप्त ज्ञान - निष्पक्ष तर्क द्वारा, मिट्टी के विघटनकारी तत्वों के साथ-साथ मनुष्य को मिटा देगा। मनुष्य की प्रकृति और उत्पत्ति के वैज्ञानिक रूप से क्रिश्चियन स्पष्टीकरण अमर गवाही के साथ सभी भौतिक अर्थों को नष्ट कर देते हैं। यह अमर होने के आध्यात्मिक अर्थ में गवाही देता है, जिसे किसी अन्य तरीके से प्राप्त नहीं किया जा सकता है।

10. 7 : 18-21

यदि आध्यात्मिक भावना हमेशा पुरुषों का मार्गदर्शन करती है, तो अधिक उत्साह वाले क्षणों और अधिक भक्तिपूर्ण आत्म-घृणा और पवित्रता के साथ बेहतर जीवन से बाहर हो जाएगा।

11. 14 : 1-11

यदि हम शरीर के साथ समझदार हैं और एक निगम, भौतिक व्यक्ति, जिसका कान हम प्राप्त करेंगे, के रूप में सर्वशक्तिमानता का सम्मान करते हैं, हम आत्मा के प्रदर्शन में "शरीर से अनुपस्थित" और "प्रभु के साथ उपस्थित" नहीं हैं। हम "दो स्वामी की सेवा नहीं कर सकते।" "प्रभु के साथ वर्तमान" होना, केवल भावनात्मक परमानंद या विश्वास नहीं है, बल्कि वास्तविक प्रदर्शन और जीवन की समझ है जैसा कि क्राइस्टियन साइंस में सामने आया है। "प्रभु के साथ" होना ईश्वर के कानून का पालन करना है, परमात्मा द्वारा पूर्ण रूप से शासित होना, - आत्मा द्वारा, पदार्थ द्वारा नहीं।

12. 96: 4-11 (*से 2nd.*)

प्रेम अंत में सद्भाव के समय को चिह्नित करेगा, और आध्यात्मिकता का पालन करेगा, क्योंकि प्रेम आत्मा है। इससे पहले कि त्रुटि पूर्ण रूप से नष्ट हो जाए, सामान्य सामग्री की दिनचर्या में रुकावटें आएंगी। पृथ्वी नीरस और उजाड़ हो जाएगी, लेकिन गर्मी और सर्दी, बीज और फसल (हालांकि बदले हुए रूपों में), अंत तक जारी रहेगी, - जब तक कि सभी चीजों का अंतिम आध्यात्मिकरण नहीं हो जाता। "सबसे गहरा समय सुबह से पहले होता है।"

13. 14 : 12-30

एक क्षण के लिए सचेत हो जाएं कि जीवन और बुद्धि विशुद्ध रूप से आध्यात्मिक है, - न तो भौतिक में और न ही भौतिक के साथ, - और शरीर तब कोई शिकायत नहीं करेगा। यदि बीमारी में विश्वास से पीड़ित हैं, तो अचानक आप खुद को स्वस्थ पाएंगे। शरीर को आध्यात्मिक जीवन, सत्य और प्रेम द्वारा नियंत्रित किए जाने पर दु: ख को आनंद में बदल दिया जाता है। इसलिए यीशु की प्रतिज्ञा की आशा पूरी हुई: "जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूं वह भी करेगा ... क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूं," — [क्योंकि अहंकार शरीर से अनुपस्थित है, और सत्य और प्रेम के साथ मौजूद है।] प्रभु की प्रार्थना आत्मा की प्रार्थना है, भौतिक अर्थ की नहीं।

भौतिक समझ के विश्वास और सपने से पूरी तरह से अलग, आध्यात्मिक समझ और पूरी पृथ्वी पर मनुष्य के प्रभुत्व की चेतना को प्रकट करके, जीवन दिव्य है। यह समझ त्रुटि निकालती है और बीमारों को चंगा करता है, और इसके साथ आप "धिकारी की नान" बोल सकते हैं।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6